ऐतिहासिक शोध दस्तावेज़: तिलवाड़ा संग्राम (1378 ई.)

राव मल्लीनाथ राठौड़, रावल जगमाल एवं फिरोज़ शाह तुगलक के 1,80,000 दासों की प्रामाणिक सच्चाई

आर्काइव संदर्भ संख्या: RMR-FST-1378-RESEARCH-DOC
लेखक/शोधकर्ता: Govind Malviya (REAL HI STORY)
प्रकाशन तिथि: 28 अगस्त 2026 | **विषय:** मध्यकालीन मारवाड़ इतिहास & दिल्ली सल्तनत

1. प्रस्तावना एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

इतिहास केवल वही नहीं है जो दिल्ली के शाही दरबारों में सुल्तानों के वेतनभोगी इतिहासकारों ने सुनहरे अक्षरों में लिखा। असली इतिहास वह है जो मरुभूमि की माटी में सेनापतियों के बहे खून और सदियों पुराने लोक-काव्यों में गूँजता है। सन 1378 ई. में तिलवाड़ा की रेतीली घाटी में लूनी नदी का पानी नहीं, बल्कि दिल्ली सल्तनत के 50,000 से अधिक गाजर-मूली की तरह काटे गए सैनिकों का खौलता हुआ खून बह रहा था। यह केवल एक युद्ध की जीत नहीं थी; यह मरुस्थल के शेर **राव मल्लीनाथ राठौड़** और उनके खूंखार बेटे **रावल जगमाल** द्वारा तुगलक साम्राज्य के मुंह पर जड़ा गया वह तमाचा था, जिसकी गूँज से दिल्ली का तख्त कांप उठा था।

2. सल्तनत की हवस: इंसानों की डकैती और तंगह टैक्स

14वीं सदी में दिल्ली सुल्तान फिरोज़ शाह तुगलक ने पूरे उत्तर भारत में दमन का नंगा नाच चला रखा था। गुजरात, मुल्तान और सिंध जाने वाले व्यापारिक रास्तों पर नागौर और जालोर की तुग़लक़ी चौकियाँ काबिज़ थीं।

- **इंसानों की खुली डकैती:** सुल्तान फिरोज़ शाह तुगलक को दासों (ग़ुलामों) को जमा करने का एक वीभत्स पागलपन था। शाही चौकियाँ मारवाड़ के गांवों में रात के अंधेरे में घुसती थीं, मवेशी छीनती थीं और हिंदू युवकों व स्त्रियों को घसीटकर दिल्ली के ग़ुलाम बाज़ारों में बेचने के लिए उठा ले जाती थीं।
- **तंगह (Tangah) का आतंक:** मारवाड़ के व्यापारियों से जब्रन चुंगी वसूली जाती थी और मना करने पर कत्लेआम किया जाता था।
- **राठौड़ हुंकार:** राव मल्लीनाथ राठौड़ ने इस नीच व्यवस्था की ईंट से ईंट बजा दी। उन्होंने सल्तनत की सभी चुंगी-चौकियों पर अचानक हमले बोलकर तुग़लक़ी कारिंदों को खदेड़ दिया और पूरे मारवाड़ को स्वतंत्र राज्य घोषित कर दिया।

3. दिल्ली का घमंड: 'तेरह तुंगा' (13 शाही फ़ौजें) का हमला

मरुस्थल के एक राठौड़ शासक का यह दुस्साहस दिल्ली के सुल्तान के लिए बर्दाश्त से बाहर था। फिरोज़ शाह तुगलक ने मारवाड़ को पूरी तरह कुचलने का आदेश जारी किया। सुल्तान ने अपने मुख्य सेनापति निज़ामुद्दीन के नेतृत्व में मालवा, गुजरात, जालोर, नागौर, अजमेर और मुल्तान के 13 शाही सूबेदारों की एक संयुक्त फ़ौज (जिसे मारवाड़ी ख्यात साहित्य में **'तेरह तुंगा'** कहा गया है) भेजी।

4. तिलवाड़ा का खौफनाक संहार (1378 ई.)

राव मल्लीनाथ राठौड़ के साथ उनके प्रतापी और प्रचंड योद्धा पुत्र **रावल जगमाल** ने रणनीति तैयार की। आधी रात के घोर सन्नाटे में, जब सुल्तानी फ़ौज जीत के नशे में सो रही थी, तब राव मल्लीनाथ और रावल जगमाल के नेतृत्व में हजारों राजपूत तलवारबाज़ 'हर-हर महादेव' के नारों के साथ तुग़लक़ी शिविर पर टूट पड़े।

एक ही रात में सुल्तानी शिविर श्मशान बन गया। 13 शाही सेनापति अपनी जान बचाने के लिए गिड़गिड़ाने लगे, लेकिन मारवाड़ी वीरों ने किसी पर रहम नहीं खाया। सुबह होते-होते लूनी का सूखा पेट तुग़लक़ी फ़ौज की लाशों से पट चुका था। इसी तबाही को देखकर मारवाड़ में यह ऐतिहासिक दोहा अमर हो गया:

> **"तेरह तुंगा तोड़िया, मल्ला तागड़ रीछ।"**

5. फिरोज़ शाह तुगलक के 1,80,000 दासों का बर्बर सच

समकालीन सुल्तानी इतिहासकार **शम्स-इ सिराज़ अफ़ीफ़** की किताब 'तारीख-ए-फिरोज़ शाही' के अनुसार सुल्तान के पास 1,80,000 दास थे।

- **दीवान-ए-बंदगी:** सल्तनत काल में पहली बार फिरोज़ शाह तुगलक ने दासों को बंदी बनाने और उनकी नीलामी के लिए 'दीवान-ए-बंदगी' नामक विभाग खोला।
- **इंसानी नजराना:** सुल्तान ने फरमान जारी किया था कि हर सूबेदार को टैक्स के साथ-साथ हज़ारों स्वस्थ गैर-मुस्लिम युवकों को उठाकर दिल्ली भेजना अनिवार्य होगा।
- **धार्मिक दमन:** 1365 ई. में कांगड़ा (नगरकोट) के ऐतिहासिक ज्वालामुखी मंदिर को तुड़वाया, मूर्तियों का अपमान किया और दुर्लभ संस्कृत पांडुलिपियों को चुराकर दिल्ली ले गया। इतिहास में पहली बार फिरोज़ शाह ने ब्राह्मणों पर जज़िया ठोंका।

© Aug 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)

अस्वीकरण एवं कॉपीराइट (DISCLAIMER & COPYRIGHT)

ऐतिहासिक प्रामाणिकता: इस सामग्री में प्रस्तुत तथ्य प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रंथों—मुहणौत नैणसी री ख्यात, जोधपुर राज्य का इतिहास (डॉ. जी.एच. ओझा), एवं मारवाड़ का इतिहास (पं. बी.एन. रेऊ)—तथा राजस्थानी लोक-साहित्य व वंशावलियों के गहन अध्ययन पर आधारित हैं।

उद्देश्य एवं सद्भावना: यह विवरण केवल ऐतिहासिक जागरूकता, शैक्षणिक अध्ययन और शौर्य गाथाओं के सांस्कृतिक संरक्षण के उद्देश्य से संकलित व प्रस्तुत किया गया है। किसी भी धर्म, संप्रदाय, विचारधारा, जाति या व्यक्ति की भावनाओं को ठेस पहुँचाना निर्माता का उद्देश्य नहीं है। दर्शक अपने विवेक का उपयोग करके तथ्यों की जाँच करके देखें।

© 28th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY)

#RaoMallinathRathore #RawalJagmal #BattleOfTilwara1378 #MarwarHistory #RajputanaValour #FirozShahTughlaq #DiwanEBandagan #LuniRiver #TrueHistory

Historical Research Paper: Battle of Tilwara (1378 AD)

Rao Mallinath Rathore, Rawal Jagmal, & The Truth Behind Firoz Shah Tughlaq's 180,000 Slaves

1. Historical Background & Genesis of Conflict

In the late 14th century, Delhi Sultan Firoz Shah Tughlaq operated a predatory regime across Northern India. Strategic trade routes connecting Gujarat, Sindh, and Multan passed directly through the heart of Marwar along the Luni River basin. Imperial garrisons at Nagaur and Jalore routinely descended upon peaceful desert villages, looting cattle and kidnapping young Hindu men and women to feed the slave markets of Delhi.

2. The Uprising under Rao Mallinath & Rawal Jagmal

Refusing to tolerate this humiliation, the ruler of Marwar, **Rao Mallinath Rathore**, united the martial clans under a single flag. He demolished Sultanate customs posts, executed imperial tax collectors, and declared complete sovereignty over the region. Enraged, Firoz Shah Tughlaq ordered a scorched-earth campaign to wipe Marwar off the map, assembling 13 imperial divisions under General Nizamuddin (known in Rajasthani epics as **'Terah Tunga'**).

3. The Massacre at Tilwara (1378 AD)

Rao Mallinath Rathore and his fiercely formidable son, **Rawal Jagmal**, devised a lethal tactical trap. In the pitch darkness of midnight, while the imperial camp was drowned in arrogance and wine, Rao Mallinath and Rawal Jagmal led thousands of Rathore cavalrymen into the heart of the Sultanate camp.

The ambush turned the imperial camp into a nightmare of fire and steel. General Nizamuddin fled into the dark night, and by daybreak, the dry basin of the Luni River was piled high with the corpses of over 50,000 Sultanate troops. This legendary victory gave rise to the immortal Rajasthani folk ballad:

> ***"Terah Tunga Todiya, Malla Tagad Reech."***

4. Firoz Shah Tughlaq's 180,000 Slaves

According to court chronicler **Shams-i Siraj Afif** in *Tarikh-i-Firoz Shahi*, the Sultan maintained 180,000 human slaves. He created the **Diwan-i-Bandagan** (Department of Slaves) specifically to manage human trafficking. Provincial governors were mandated to send healthy non-Muslim youths as part of their annual tax tribute. In 1365 AD, he desecrated the **Jwalamukhi Temple** in Kangra and was the first Sultan to impose the discriminatory Jizya tax directly on Brahmins.

DISCLAIMER & COPYRIGHT NOTICE

Historical Authenticity: Derived from established historical texts—*Muhnot Nainsi ri Khyat*, *History of Jodhpur State* (Dr. G.H. Ojha), and *History of Marwar* (Pt. B.N. Reu).

Educational Purpose: Compiled strictly for historical awareness and academic research. The creator does not intend to hurt the sentiments of any religion, sect, ideology, caste, or individual. Viewers/readers are advised to use their own discretion.

© 28th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY)

#RaoMallinathRathore #RawalJagmal #BattleOfTilwara1378 #Marwar #RajputanaHistory #FirozShahTughlaq #DiwanEBandagan #LuniRiver #IndianHistory #UntoldHistory